http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 9, 12-13

Article ID:468

बरसात के मौसम में पशुपालन की समस्याएँ और उनके समाधान

रवि शंकर कुमार मंडल, सोनी कुमारी, रंजना सिंहा, सोनम भट्ट एवं अनिल कुमार

बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना

*अनुरूपी लेखक

रवि शंकर कुमार मंडल*

भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहाँ पशुपालन कृषि का अभिन्न अंग माना जाता है। भारत दुनिया में सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है और वैश्विक दुग्ध उत्पादन का लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा भारत से आता है। पशुधन न केवल किसानों के लिए आय का प्रमुख स्रोत है, बल्कि दूध, मांस, ऊन, खाल और गोबर जैसे उत्पादों के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान करता है। किसानों के जीवन में गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सूअर और घोड़े जैसे पालतू जानवरों की भूमिका बहुत अहम है।

बरसात का मौसम पशुपालकों के लिए चुनौतियों से भरा होता है। इस समय पर्यावरण में नमी बढ़ने से बीमारियों का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। गीले और अस्वच्छ वातावरण में बैक्टीरिया, वायरस, फंगस और परजीवी तेजी से पनपते हैं, जिससे जानवर बीमार पड़ सकते हैं। इसके अलावा, भारी बारिश, पानी का जमाव, गीला चारा, और कीटों का प्रकोप भी किसानों के लिए परेशानी का कारण बनते हैं।

इसलिए किसानों के लिए यह जानना जरूरी है कि बरसात के मौसम में पशुओं की देखभाल कैसे की जाए, ताकि उत्पादन (दूध और मांस) में कमी न आए और पशुओं का स्वास्थ्य सुरक्षित रहे। बरसात के मौसम में नमी और गीलापन बढ़ने से पशुओं में कई तरह की बीमारियाँ फैलती हैं। इनमें से कुछ प्रमुख रोग इस प्रकार हैं:

1. गलघोटू रोग (एच एस):

यह रोग हेमोराजिक सेप्टीसीमिया बैक्टीरिया नामक से होता है। यह बरसात की शुरुआत में सबसे ज्यादा फैलता है। इसके लक्षण हैं तेज बुखार, गले और गर्दन में सूजन, साँस लेने में कठिनाई और लार का अधिक निकलना। यह रोग अचानक मृत्यु का कारण भी बन सकता है। रोकथाम के लिए बरसात से पहले मवेशियों को एच एस का टीका लगवाना जरूरी है।

2. लंगड़ी रोग (ब्लैक क्वार्टर/बीक्यू):

यह रोग क्लोस्ट्रिडियम शॉवोइ नामक जीवाणु से होता है। यह बैक्टीरिया आमतौर पर मिट्टी में लंबे समय तक जीवित रहता है। बरसात के मौसम में यह अधिक सक्रिय हो जाता है, खासकर जब मिट्टी गीली होती है। जब पशु गंदे चारे या पानी के साथ इसके स्पोर खा लेते हैं, तो यह शरीर में प्रवेश करता है। इस रोग से संक्रमित पशु को तेज बुखार आता है और मांसपेशियों में सूजन होती है, जिससे गैस निकलती है। यह भी बरसात में तेजी से फैलता है। रोकथाम के लिए बरसात से पहले ब्लैक क्वार्टर का टीका लगवाना चाहिए।

3. खुरपका मुँहपका रोग (एफएमडी):

यह एक अत्यधिक संक्रामक वायरल रोग है, जो गाय, भैंस, बकरी, भेड़ और सूअर जैसे खुर वाले जानवरों में होता है। यह रोग फुट एंड माउथ डिजीज वायरस के कारण होता है। यह वायरस संक्रमित जानवर की लार, दूध, मूत्र, मल और साँस के जरिए फैलता है। गंदे पानी, चारे, बर्तन और इंसानों के कपड़ों से भी वायरस फैल सकता है। इस रोग के मुख्य लक्षण है मुँह में छाले (जीभ, होंठ और मसूड़ों पर), पैरों की खाल के बीच छाले (खुर के पास), अत्यधिक लार टपकना, खाना-पीना बंद करना, दूध उत्पादन में अचानक कमी। बछड़े में यह रोग बहुत जानलेवा होती है, जिसमें हृदय रोग से मौत हो सकती है।

इस बिमारी के रोकथाम और नियंत्रण के लिए पशुओं को हर 6 महीने में एफएमडी का टीका जरूर लगवाएँ। बीमार पशु को

अलग रखें (कम से कम 14 दिन) और तुरंत लक्षणात्मक इलाज करवाएं। शेड और बर्तन को कीटाणुनाशक से साफ करें। संक्रमित जानवरों का दूध न बेचें।

4. थनैला (मास्टाइटिस):

यह दूध देने वाले जानवरों (गाय, भैंस, बकरी) में होने वाला एक प्रमुख रोग है। इसमें थन (न्ककमत) में संक्रमण हो जाता है, जिससे दूध की गुणवत्ता और मात्रा पर गंभीर असर पड़ता है। बरसात में गीले बिछावन और गंदगी के कारण थन में संक्रमण हो जाता है। थन सूज जाता है और दूध में बदलाव आ जाता है। रोकथाम के लिए शेड को सूखा और साफ रखना जरूरी है। दूध दुहने से पहले और बाद में थन को गर्म पानी से धोकर सुखाएँ। साफ-सुथरे हाथों और उपकरणों का प्रयोग करें। बरसात में गीला बिछावन तुरंत बदलें। रोग होने पर पशु चिकित्सक की सलाह से एंटीबायोटिक उपचार करें

5. आंतरिक परजीवी संक्रमणः

बरसात के समय गीली मिट्टी, गंदे पानी और हरे चारे में नमी बढ़ने के कारण आंतरिक परजीवियों का प्रकोप बहुत बढ़ जाता है। पशु गंदे चारे और पानी में मौजूद अंडों को खा लेते हैं। ये अंडे आंतों में जाकर वयस्क कृमि में बदल जाते हैं। इससे दस्त, खून की कमी और वजन घटने जैसी समस्याएँ होती हैं। रोकथाम के लिए बरसात के मौसम की शुरुआत और खत्म होने पर डीवॉर्मिंग (कृमिनाशक दवा) कराएँ। साफ और ताजा पानी दें। शेड और चरागाह में पानी का जमाव न होने दें। चारा खिलाने से पहले उसे साफ करें।

6. बाहरी परजीवी संक्रमणः

बरसात के मौसम में नमी और गीले वातावरण के कारण बाहरी परजीवी जैसे टिक (Tick), जूँ (Lice), मक्खियाँ (Flies), माइट्स (Mites) तेजी से बढ़ते हैं। यह परजीवी पशुओं के खून पर जीवित रहते हैं और त्वचा संबंधी रोगों के अलावा कई खतरनाक बीमारियों को भी फैलाते हैं।

प्रमुख बाहरी परजीवी और इनके नुकसानः

किलनी (टिक): खून चूसते हैं और बेबेसिया, थेलेरिया, एनाप्लाज्मा जैसी बीमारियाँ फैलाते हैं।

जूँ (लाइस): खून की कमी (एनीमिया), खुजली और बेचैनी का कारण।

मक्खियाँ: घावों में कीड़े डालना, संक्रमण फैलाना।

माइट्सः त्वचा पर खुजली और स्कैबी रोग।

इनकी रोकथाम के लिए कीटनाशक दवा का उपयोग करना चाहिए। बरसात से पहले और दौरान एकारिसाइड स्प्रे करें जैसे डेल्टामेथ्रिन, साइपरमेथ्रिन, अमिट्राज।पशु को एकारिसाइड दवाओं के घोल से डिप या स्नान कराना चाहिए। शेड में नमी और गोबर को तुरंत साफ करें। दीवारों और फर्श पर कीटनाशक का छिड़काव करें। अगर परजीवी के कारण घाव हैं, तो एंटीसेप्टिक लगाएँ। गोबर और गंदगी समय-समय पर हटाएँ।

निष्कर्ष

बरसात का मौसम पशुपालन के लिए चुनौतीपूर्ण समय होता है। इस मौसम में नमी और गंदगी के कारण संक्रामक रोग, परजीवी संक्रमण और थन रोग जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ती हैं, जिससे पशुओं का स्वास्थ्य और उत्पादकता दोनों प्रभावित होते हैं। सावधानी और सही प्रबंधन से बरसात के मौसम में होने वाले नुकसान को काफी हद तक रोका जा सकता है। स्वस्थ पशु ही किसान की आय और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाते हैं।